आदिवासी कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(सन् 1998 से 2018 तक)

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़ आगरा के अन्तर्गत पीएच.डी. (हिन्दी)
उपाधि हेतु शोध प्रबन्ध की
रूपरेखा
2019

शोध निर्देशक

डॉ. सूरज प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय
डी.ई.आई.

शोधार्थी

माधुरी वैश्य

हिन्दी विभाग, कला संकाय
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

आदिवासी कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(सन् 1998 से 2018 तक)

प्रस्तावना –

साहित्य और समाज का बहुत पुराना और गहरा सम्बन्ध है। समाज जब–जब परिवर्तित होता है, तब–तब समकालीन लेखनी में भी इसकी छवि प्रतिबिम्बित होती है। समाज में नित्य परिवर्तन होने के नाते तत्कालीन साहित्य का समाजशास्त्र भी अलग–अलग रूप लेकर समाज को एक नया मार्ग दिखाने का काम करता है। साहित्यकार जिस समाज में अपना जीवनयापन करता है उसी का विरोध या गुणगान करने लगता है। साहित्य पर समाज की प्रगति निर्भर करती है। पहले समाज का निर्माण होता है, बाद में साहित्य की प्रस्तुति होती है। जिस तरह समाज में बदलाव होते रहते हैं उसी तरह साहित्य में भी अलग–अलग पहलू सामने आने लगते हैं। साहित्य समाज का जीता–जागता इतिहास है। समाज के बिना साहित्य की रचना नहीं होती और साहित्य के बिना समाज अधूरा है। इसी कारण दोनों का सम्बन्ध अटूट दिखने लगता है। मानव जब एकत्रित होकर जीवनयापन करने लगा तब से समाज का उदय हुआ। इसमें भी समाज अनेक शाब्दिक अर्थ समुदाय, दल, समूह, झुण्ड, गिरोह आदि लेकर सामने आया, उसी तरह समाजशास्त्र की परिभाषा में भी अनेक मतभेद दिखाई देते हैं। परन्तु आधुनिक युग में समाजशास्त्र पर अधिक महत्व दिया जाने लगा है।

पहली बार फ्रांस के एक दार्शनिक समाजचिन्तक ने सर्वप्रथम समाजशास्त्र शब्द का प्रचार प्रसार किया। इसका श्रेय आगस्त कॉम्त को मिलता है, इन्होंने समाजशास्त्र शब्द का परिचय 19वीं शताब्दी पूर्व में कराया। फ्रांसीसी क्रांति की व्याकुलता के शीघ्र बाद ही लिखते हुए, उन्होंने प्रस्थापित किया कि सामाजिक निश्चयात्मकता के माध्यम से सामाजिक बुराइयों को दूर किया जा सकता है। मेक्स वेबर का मानना है कि समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया (सोशल एक्शन) का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। यहाँ समाज क्रिया का तात्पर्य सामाजिक व्यवहार

से है। अतः समाजशास्त्र मानवीय चरित्र का अध्ययन या सामाजिक समूह का अध्ययन करने वाला शास्त्र है।

मार्क्स का मत था कि ''प्रत्येक समाज का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।'' आदिम युग से लेकर आधुनिक युग तक समाज में दो वर्ग ही प्रमुख रहे– एक शोषक वर्ग तथा दूसरा शोषित वर्ग। इन दोनों के नाम विभिन्न युगों में भिन्न हो सकते हैं। शोषक और शोषित वर्ग एक दूसरे का कभी दबे और कभी खुलेरूप में निरन्तर विरोध करते रहे हैं। यही विरोध वर्ग संघर्ष के रूप में प्रतिफलित होता रहा है। यह पहली, बार दुनिया के समाज के विकास की समाजशास्त्रीय अवधारणा थी जिसे उन्होंने छः चरणों में विभाजित किया था।

भारतीय सन्दर्भ में डॉ० अम्बेडकर ने समाज का नये तरीके से समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया है। उन्होंने बताया कि भारतीय समाज एक जातिवादी समाज है। वे इसे इस रूप में लिखते हैं– ''भारतीय समाज एक चार मंजिला इमारत की तरह है जो जिस मंजिल पर पैदा होता है, वह उसी मंजिल पर सारी जिंदगी रहता है और मर जाता है। किसी को भी ऊपर नीचे आने जाने की गुंजाइश नहीं है।'' इसी संदर्भ में वे हाशियाकृत समुदाय की बात कर रहे थे जिसमें आदिवासी समुदाय भी शामिल है।

आदिवासी चिन्तक रामदयाल मुंडा इसी दिशा में संकेत करते हुए आदिवासियों के विकास के लिए तीन रास्ते समझाते थे कि ''अपने पुरातन रीतिरिवाजों के साथ अलग रहो, मुख्य धारा के स्थापित धर्मों के साथ घुल मिल जाओ, और उसकी संस्कृति अपना लो, या अपनी शर्त के साथ मुख्य धारा में शामिल हो जाओ।'' वह तीसरे के पक्षधर थे।

निष्कर्षतः समाजशास्त्र की परिभाषा के बारे में कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र सामाजिक संरचना, संख्याएँ, प्रकार्य अंतः क्रियायें आदि समाज की निरन्तर घटित घटनाओं और उनके परिवर्तन का अध्ययन है। सामाजिक क्रिया के अंतर्गत सभी सामाजिक गतिविधियों का समाजशास्त्र के नियमों और सिद्धातों के अनुसार अध्ययन किया जाता है।

प्रस्तावित शोध विषय 'आदिवासी कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन' के अन्तर्गत हम आदिवासी कहानियों को नए समाजशास्त्र की शोधदृष्टि से देखने का प्रयास करेंगे। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। इस दर्पण में आदिवासी की कथा–व्यथा कहाँ है? साहित्य जगत में दलित विमर्श, स्त्री विमर्श की चर्चा के बाद अब आदिवासी विमर्श की चर्चा शुरू हो गई हैं किसी भी विमर्श या चिंतन का उद्देश्य किसी भी अनछुए सामाजिक विषय को अकादमिक क्षेत्र में लाकर उसपे चर्चा करना या शोध करना होता है। विमर्श या चिंतन का प्रमुख उद्देश्य होता है समाज में किसी कारण से पिछड़े, अनदेखा किये गए, किसी वर्ग विशेष का पक्ष अकादमिक रूप में लेकर आना। अर्थात् ऐसे वर्ग का पक्षधर होना जिसके वजूद को अन्य वर्चस्ववादी वर्गों ने अपने सामने कुछ नहीं समझा। आज की समाज व्यवस्था में आदिवासी वर्ग ऐसा ही है जो मुख्य धारा से दूर हाशिये पर जानबूझ कर धकेल दिया गया। आदिवासी कवि हरिराम मीणा का कहना है कि–''हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित लेखकों से हमें अपेक्षा थी कि वे स्त्री, दलित, अल्पसंख्यक, आदिवासी एवं हाशिये पर डाली जाती रही अन्य अस्मिताओं को अपेक्षित अभिव्यक्ति देते, वह अपेक्षा पूरी नहीं हुई। यही वजह है कि इन अस्मिताओं से जुड़े लेखकों को एक मुहिम के तौर पर हिन्दी साहित्य में हस्तक्षेप करना पड़ा और अपनी पहचान बनाने के लिए जूझना पड़ा।''

बिरसा मुंडा के आन्दोलन ने आदिवासी समाज में नयी चेतना का संचार किया। उनमें इंसानी गरिमा की भावना पैदा हुई। आदिवासी लेखन हिन्दी के अस्तिमतावादी विमर्शों में सबसे नवीन है। वर्षों से हाशिये पर रखे गए आदिवासी समुदाय को आज अकादमिक जगत और साहित्य में जगह मिल रही है और सबसे सही बात ये है कि इस दिशा में इस समुदाय के लोगों द्वारा पहल की जा रही है। आदिवासी कहानीकार रोज केरकेट्टा के कहानी संग्रह 'पगहा जोरी जोरी रे घाटो' (कतार में लौटती हुई चिड़िया) 2011 में प्रकाशित इनका पहला कहानी संग्रह है इस कथा संग्रह में लेखिका ने आदिवासियों के उस भाव संग्रह को बुना है जिसे बौद्धिक व साहित्यिक जगत में ट्राइबल इथोज के रूप में जाना जाता है। हिन्दी कथा साहित्य में ये ऐसी बानगी है जो पाठकों को नगर साहित्य से इतर एक अलग तरह का आदिम अस्वाद देती है। उसी प्रकार ऐलिस एक्का की कहानियाँ भी हमें आदिवासी समाज से परिचित कराती है। ऐलिस

अपनी 60 के दशक की उम्मीदों को सामने रखती हैं, लेकिन बाद में वो उस चाल को भी सामने रखती है जिसका शिकार आदिवासी समुदाय होता है। ऐलिस की कहानियाँ आदिवासी जीवन दर्शन के अनुरूप इन्सान और प्रकृति के आत्मीय रिश्ते को रेखांकित करती है, और रिश्ते में आ रही टूटन से हमें सचेत भी करती है।

आदिवासी भाषा और संस्कृति–

आदिवासी संस्कृति के प्राथमिक धरातल पर जीवन यापन करते है। वह समान्यतः क्षेत्रिय समूहों में रहतें है और उनकी संस्कृति अनेक दृष्टियों से स्वयंपूर्ण रहती है। सीमित परिधि तथा लघु जनसंख्या की इन संस्कृतियों के रूप में स्थिरता रहती है। किसी एक काल में होनें वाले सांस्कृतिक परिवर्तन अपने प्रभाव एवं व्यापकता में अपेक्षाकृत सीमित होते है। एशिया तथा अन्य द्वीप समूहों में आज भी आदिवासी संस्कृतियों के अनेक रूप देखे जा सकते है। भारत में लगभग 360 प्रमुख जनजातियाँ निवास करती है। इनमें से करीब 100 जनजातीय भाषाएँ बोली जाती हैं। जनसंख्या के आधार पर भारत में प्रमुख जनजातियाँ– भील, संथाल, उरांव, गौंड, मुंडा, कोंड तथा मीणा, लमाणी, बंजारा है। भील जनसंख्या की दृष्टि से भारत की सबसे बड़ी आदिवासी जनजाति है। ये जनजाति उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान में पायी जाती है। गौंड भारत में निवास करने वाली जनजाति में गौंड दूसरी प्रमुख जनजाति है। मुख्य रूप से मध्यप्रदेश में पाई जाती है। तीसरी जनजाति संथाल है जो बंगाल में कृषक के रूप में, असाम में चाय के बागानों के कुलियों के रूप में जूट तथा कपड़ों की मिलों में मजदूरों के रूप में काम करते हैं। उरांव जनजाति द्रविण वंश से सम्बन्ध रखती हैं। ये बिहार राज्य के दक्षिण–पश्चिम में सोन नदी, महानदी के निकट के पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है। मीणा जनजाति राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति है और भारत की प्रमुख जनजातियों में से एक है। मुंडा जनजाति भारत में छठे स्थान पर आती है इसका कोल वंश से सम्बन्ध है। इनके निवास स्थान में मध्यप्रदेश, बिहार, झारखण्ड उड़ीसा, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल आदि है। कोंड जनजाति भारत में जनसंख्या की दृष्टी से सांतवें स्थान पर है। मूलतः बिहार,

उड़ीसा, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, मध्यप्रदेश में वास करते हैं। मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में कंध जब कि आंध्रप्रदेश में कोंड कहलाती है।

आदिवासी साहित्य वाचिक तौर पर अपनी मूल आदिवासी भाषाओं में समृद्ध और विपुल है। भारत में लिखित आदिवासी साहित्य की शुरूआत बीसवीं सदी के आरम्भिक दौर में होती है। जब औपनिवेशिक दिनों में आदिवासी समुदाय आधुनिक शिक्षा के संपर्क में आते हैं। विशेषकर उत्तरपूर्व के आदिवासी इलाकों में। तब से लेकर आज तक अंग्रेजी और हिन्दी, बंगला, उड़ीसा, असमी, मराठी आदि अन्य भारतीय भाषाओं में आदिवासी साहित्य लेखन निरन्तर प्रगति पर है और हर वर्ष सौ से अधिक पुस्तकें विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित हो रही है। झारखण्ड में संताली साहित्य सम्मेलन होते हैं। विश्व आदिवासी साहित्य सम्मेलन होते हैं, क्योंकि ये जनजाति हिन्दुस्तान के आस–पास के कुछ देशों में मौजूद है। संथालियों को अपनी भाषा पर बहुत गर्व है। संथाली अपनी भाषा में लिखते हैं, हिन्दुस्तान के अन्य आदिवासियों ने उतना साहित्य नही लिखा जितना संथालियों ने लिखा है।

आदिवासी समाज समूह में विश्वास रखता है। अधिकांश आदिवासी समूह में निजता की भावना नहीं पाई जाती है। यहाँ सब कुछ सामूहिक है, परम्परा, संस्कृति, इतिहास यहाँ तक कि शोषण और उसका प्रतिरोध भी सामूहिक है। आजादी से पहले कई तरह की समस्याएँ थी जिसमें प्रतिबन्ध, महाजनी, पुलिस प्रशासन की ज्यादती जैसी समस्या थी तो स्वतंत्रता के बाद अलग तरह की समस्या आ गई। जिनमें आदिवासियों के अपने अस्तित्व पर भी खतरा रहता है, उन्हें अपने जल जंगल जमीन से बेदखल होना पड़ रहा है, विस्थापन और पुनर्वास उनकी मूल समस्या है। निश्चित तौर पर आदिवासियों की खुद की संपन्न सांस्कृतिक पहचान खत्म होती जा रही है। आदिवासियों की रक्षा पर प्रश्नचिन्ह लग रहा है। अब तो कानून बनाकर उन्हें जंगल से बेदखल किया जा रहा है। आदिवासी आज भयावह संकट में है। आदिवासी साहित्य अस्मिता की खोज, अस्तित्व के संकटों और उसके खिलाफ हो रहे प्रतिरोध का साहित्य है।

प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित शोध कार्य–

प्रस्तावित शोध विषय से सम्बन्धित शोध कार्य नही किया गया है। बहुत से विश्वविद्यालयो के पुस्तकालयों में और शोध गंगा जैसे साइट्स जाँचने के बाद ज्ञात हुआ कि आदिवासी कविताओं, उपन्यासों पर शोध कार्य हुआ है परन्तु कहानियों पर अब तक काई शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः यह शोध कार्य नवीनतम एवं मौलिक होगा।

प्रस्तावित शोध का उद्देश्य एवं महत्त्व –

प्रस्तावित शोध विषय 'आदिवासी कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन' के अंतर्गत आदिवासी जीवन की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्वरूप को शोध कार्य के माध्यम से विश्लेषण किया जायेगा। आदिवासी जन जीवन की त्रासदी, उनके जल, जंगल, जमीन की समस्या और विस्थापन, पुनर्वास, रोजगार, लघु व्यवसाय जैसी मूल समस्या, स्वतंत्रता से पहले व बाद की स्थिति का ब्यौरेवार अध्ययन इस शोध कार्य का उद्देश्य होगा। आदिवासी स्त्री अस्मिता और शोषण, आदिवासी भाषा और संस्कृति, भारत में निवास करती विभिन्न जनजातियों का नामकरण और क्षेत्र आदि पर विस्तार से विश्लेषण किया जायेगा। साहित्य में आदिवासी पर अभी बहुत कम लिखा गया है। अगर लिखा भी है तो वह उनकी अपनी स्थानीय या आदिवासी भाषा में लिखा है। अधिकतर अभी भी आदिवासी लोककथा, लोकगीत, साहित्य–दर्शन, वाचिक परंपरा में ही है। उनकी भाषा संस्कृति भी अभी वाचन परंपरा में ही है। उसका संग्रहण बेहद जरूरी है। इस रूप में भी मेरा यह शोधकार्य इन्हीं बिन्दुओं की दृष्टि से भी मौलिक है।

यह शोधकार्य पूर्ण रूप से मौलिक एवं प्रासंगिक है। इस शोध के माध्यम से अन्य विद्यार्थियों, अकादमिक जगत एवं समाज को आदिवासी समाज से सम्बन्धित नवीन एवं मौलिक जानकारी प्राप्त करने में सुविधा होगी।

शोध कार्य में प्रयुक्त प्रविधि –

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु साहित्यिक समाजशास्त्र तथा विवेच्य कहानियों का गहन अध्ययन, अनुशीलन तथा संदर्भ ग्रंथों के आधार पर समीक्षात्मक, सर्वेक्षणात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक शोध प्रविधियों को प्रयोग किया जायेगा। पुस्तक, पत्र–पत्रिका, संदर्भ ग्रन्थ, अपितु विषय से सम्बन्धित लेखकों से विचार विमर्श के साथ–साथ साक्षात्कार, प्रश्नावली आदि शोध प्रविधि का समुचित प्रयोग करते हुए शोध कार्य को सार्थक बनाने का प्रयास रहेगा।

साहित्य सर्वेक्षण –

1. दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट
2. आगरा विश्वविद्यालय
3. दिल्ली विश्वविद्यालय
4. जे. एन. यू.
5. रांची यूनिवर्सिटी
6. ट्राइबल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, रांची

रूपरेखा

आदिवासी कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

(सन् 1998 से 2018 तक)

प्रथम अध्याय – साहित्य का समाजशास्त्रीय अध्ययन

1.1 समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषाएँ

1.2 समाजशास्त्रीय दृष्टि में साहित्य और समाज

1.3 साहित्य के समाजशास्त्र का स्वरूप

1.4 साहित्य के समाजशास्त्र की धाराएँ

1.5 प्रमुख समाजशास्त्रीयों के मत का परिचयात्मक विश्लेषण

1.5.1 पाश्चात्य– कार्ल मार्क्स, मादाम स्तेल, सिमोन द बोउवार, इपॉलित–अडोल्फ तेन, लियो लावेंथाल, लुसिएं गोल्डमान, रेमण्ड विलियम्स एवं अन्य चिंतक

1.5.2 भारतीय– महात्मा बुद्ध, ज्योतिबा फुले, डॉ० भीमराव अंबेडकर, गोविन्द गुरु, रामदयाल मुंडा अन्य आदिवासी चिंतक

दूसरा अध्याय – आदिवासी, साहित्य की पृष्ठभूमि का अध्ययन।

2.1 आदिवासी साहित्य की उत्पत्तिमूलक अवधारणा, परिभाषा और स्वरूप

2.2 आदिवासी साहित्य में भाषा–बोली, रीति–रिवाज, लोककला–गीत

2.3 आदिवासी समुदाय का दर्शन–संस्कृति धार्मिक व्यवस्था

2.4 आदिवासी–मूलनिवासी और ट्राईबल शब्द में उत्पत्तिमूलक अंतर

2.5 घुमंतू आदिवासी समुदाय का परिचयात्मक स्वरूप

तीसरा अध्याय – आदिवासी कहानियों में शोषण के विविध रूप

3.1 आदिवासी कहानियों में विकास और विस्थापन (सामाजिक–आर्थिक सन्दर्भ)

3.2 आदिवासी कहानियों में जल, जंगल, जमीन और आदिवासी जीवन के सवाल

3.3 आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त धार्मिक, दार्शनिक राजनीतिक सवाल

चौथा अध्याय – आदिवासी कहानियाँ : स्त्री अस्मिता एवं पितृसत्ता

4.1 आदिवासी कहानियों में स्त्री अस्मिता और पितृसत्तात्मक मूल्य

4.2 आदिवासी कहानियों में स्त्री शिक्षा एवं रोजगार के प्रश्न

4.3 आदिवासी कहानियों में आदिवासी स्त्री और सवर्ण स्त्रियों का तुलनात्मक विश्लेषण

4.4 आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त जाति का प्रश्न

पांचवा अध्याय – आदिवासी कहानियों में शिल्प और सौन्दर्य मूल्य

5.1 आदिवासी कहानियाँ और विभिन्न आदिवासी भाषा–बोली

5.2 आदिवासी कहानियों का शिल्पविधान

5.3 आदिवासी कहानियाँ और नए सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्य

5.4 आदिवासी कहानियाँ– बिम्ब, प्रतीक इत्यादि

उपसंहार

आधार ग्रन्थ

संदर्भ ग्रन्थ

विश्वकोश–शब्दकोश

पत्र–पत्रिकाएँ

साक्षात्कार, वेबसाइट

आधार ग्रन्थ

क्र.सं.	कहानी– संग्रह	कहानीकार	प्रकाशन	संस्करण
1.	अपना अपना युद्ध	वाल्टर भेंगरा 'तरुण'	सत्यभारती प्रकाशन	2014
2.	आखिर कब तक	शंकर लाल मीणा	प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली	2013
3.	आदिवासी कहानियाँ	केदार प्रसाद मीणा (सं)	अलख प्रकाशन	2011
4.	ऐलिस एक्का की कहानियाँ	वन्दना टेटे (सं)	प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन	2014
5.	कानी सरगिर	सिरका दास तिरकी	प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन	2012
5.	पूवोत्तर की आदिवासी कहानियाँ	रमणिका गुप्ता (सं)	नेशनल बुक ट्रस्ट	2011
6.	पगाह जोरी जोरी रे घाटो	रोज केरकेट्टा	देशज प्रकाशन	2009
7.	परती जमीन	पीटर पॉल एक्का	सत्यभारती प्रकाशन, रांची	2014
8.	रांची–गिरिडीह	कुजूर फ्रांसिस्का	अग्रणी पब्लिकेशन	2011
9.	राजकुमारों के देश में	पीटर पॉल एक्का	सत्यभारती प्रकाशन, रांची	2014
10.	जंगल की ललकार	वाल्टर भेंगरा 'तरुण'	लाली प्रकाशन, जमदेशपुर	
11.	बिरुवार गमछा तथा अन्य कहानियाँ	रोज केरकेट्टा	प्रभात प्रकाशन	2016
12.	लोकप्रिया आदिवासी कहानियाँ	वंदना टेटे (सं)	प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली	2016

13.	महुआ का फूल	मंगल सिंह मुंडा	मीनाक्षी प्रकाशन, नई दिल्ली	1998
14.	क्षितिज की तलाश में	पीटर पॉल एक्का	सत्याभारती प्रकाशन, रांची	2011
15.	हरद सुकू (मुंडारी हिन्दी कहानी संग्रह)	मंगल सिंह मुंडा	झारखण्ड झरोखा, रांची	2013

सहायक ग्रन्थ –

1 आदिवासी साहित्य और समाज, रमणिका गुप्ता, सामयिक पेपरबैक्स, संस्करण 2016

2 साहित्य के समाज शास्त्र की भूमिका, मैनेजर पाण्डेय, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगढ़, प्रथम संस्करण–1989

3 आदिवासी अस्मिता वाया कथा–साहित्य, रसाल सिंह बनना राममीणा, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2014

4 साहित्य और समाजशास्त्री दृष्टि मैनेजर पाण्डेय, आधार प्रकाशन, द्वितीय संस्करण–2018

5 आदिवासी स्वर, बाजवा जसप्रीत, आकृति प्रकाशन, दिल्ली, 2005

6 रामदयाल मुंडा, आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2002

7 आदिवासी संघर्षगाथा, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005

8 रमणिका गुप्ता आदिवासी स्वर और नै सताब्दी (खण्ड 1–2), रमणिका फाउंडेशन, दिल्ली, 2000

9 रामशरण जोशी आदिवासी समाज और शिक्षा, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 2005

10 शिवतोश दास, स्वतंत्रता सेनानी वीर आदिवासी, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 1983

पत्र–पत्रिका

युद्धरत आम आदमी

वां1्मय

आदिवासी दुनियाँ

आदिवासी

मंतव्य

हंस

पहल

दलित अस्मिता

आदिवासी साहित्य